5

किस्सा चिली सॉल्ट पीटर का

हमारे औद्योगिक परिदृश्य में अनेक उद्योग प्राकृतिक संसाधनों - खनिज, वनस्पति, हवा, पानी, सस्ता श्रम, ऊर्जा स्रोत आदि पर निर्भर हैं। इस धरती पर संसाधनों का वितरण काफी असमान रूप से पाया जाता है। यह असमान वितरण जहाँ एक ओर किसी देश को मनमानी का मौका देता है वहीं दूसरे देश को मोहताज़ बना देता है। ज़ाहिर सी बात है कि संसाधनों पर कब्ज़े के प्रयास, कूटनीतिक संधियाँ, माँग-पूर्ति के चक्र को बिगाड़ने की कोशिशें आदि भी होती रहती हैं। लेकिन इन सबके बीच कुछ लोग प्राकृतिक संसाधनों के विकल्प तलाशने की कोशिश भी करते हैं। एक खनिज अयस्क चिली सॉल्ट पीटर के बहाने ऐसे ही कुछ आयामों को समझने की कोशिश की गई है यहाँ।

लोकतंत्र और राजनीति विज्ञान की शिक्षा

आमतौर पर राजनीति विज्ञान, जिसे हम स्कूली स्तर पर नागरिक-शास्त्र कहकर काम चलाते हैं, की किताबों में राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, न्यायपालिका, स्थानीय शासन आदि पढ़ाया जाता है, लेकिन औपचारिक राजनीति, दलगत राजनीति के बारे में कोई चर्चा नहीं होती। न ही मौजूदा राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक घटनाओं/घटनाक्रम का कोई ज़िक्र होता है।

राजनीति विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों को लेकर एक अजीब किस्म का यथार्थवाद रहा है, जिसे हाल ही में एन.सी.ई.आर.टी. के प्रयासों से तोड़ने की कोशिश की गई है। कक्षा 6 से 12 तक की किताबों की न केवल विषय-वस्तु पर नए सिरे से काम किया गया है बल्कि किताबों को नीरस-बोझिल होने से भी बचाया गया है। इन किताबों के सलाहकार योगेन्द्र यादव बता रहे हैं पाठ्य पुस्तक लेखन की चुनौतियों और इससे जुड़े अनुभवों के बारे में।

45

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-4, (मूल अंक-61) जुलाई-अक्टूबर 2008

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

5 | **किस्सा चिली सॉल्ट पीटर का**
माधव केलकर

16 | **एक-दूजे के लिए - एक पौधा, एक कीट**
डी.एन. मिश्रराज

23 | **एक पौधा दस प्रयोग (भाग:2)**
किशोर पंवार

29 | **विद्युत बल्ब इतिहास बनने की कगार पर**
टी.वी. वैंकटेश्वरन्

45 | **लोकतंत्र और राजनीति विज्ञान की शिक्षा**
योगेन्द्र यादव

63 | **प्रकृति में सतरंगी यौन विविधता**
पारुल सोनी

70 | **बस एक-एक शून्य बढ़ाते जाओ**
राधेश्याम थवाईत

75 | **सार्थक और सक्रिय लिखित माहौल ....**
कीर्ति जयराम

87 | **हथियार**
फ्रैडरिक ब्राउन

92 | **गिरगिट नाचते भी हैं**
जेरल्ड डरैल